साध्य एवं साधन की पवित्रता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

साध्य का अर्थ है–लक्ष्य की प्राप्ति। जब हम किसी लक्ष्य को प्राप्त करने का संकल्प करते हैं तो उसकी क्रियान्विति साध्य कहलाती है। जैसे भूखे को भोजन की प्राप्ति। साध्य प्राप्ति के लिए जो उपक्रम किया जाता है वह साधन कहलता है। जैसे भोजन की प्राप्ति के लिए परिश्रम करना। अब प्रश्न यह उठता है कि हमारा साध्य कैसा होना चाहिए? संसार में ऐसा कोई व्यक्ति होगा जो अपवित्र साध्य की प्राप्ति चाहता हो। सभी व्यक्ति नैतिक और पवित्र साध्य की कल्पना करते हैं। पवित्र साध्य के प्राप्ति के लिए किसी भी प्रकार के साधन को अपनाया जा सकता है। साध्य की पवित्रता के लिए साधन की पवित्रता आवश्यक है। कुछ विचारकों का यह मानना है कि साध्य की प्राप्ति हो जाये चाहे साधन जेसा हो। साम्यवादी, पूँजीवादी एवं तानाशाह की विचारधारा यह है कि साधन पवित्र हो या अपवित्र साध्य की प्राप्ति आवश्यक है। मार्क्स ने अपने समय में पूँजीपतियों द्वारा मजदूरों, किसानों, श्रमिकों का शोषण होते देख हथियार उठाने के लिए प्रेरित किया और पूँजीपतियों से अपना हक छीनने के लिए उत्साहित किया। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने अधिकार की प्राप्ति के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहना चाहिए। चूंकि मार्क्स को अपने लक्ष्य में कामयाबी मिली अर्थात् मार्क्स के आह्वान पर मजदूरों ने हथियार उठाकर अपना अधिकार प्राप्त किया। इसलिए मार्क्स ने कहा कि साध्य साधन को न्यायोचित ठहराता है। अर्थात साध्य अच्छा है तो साधन कैसा भी हो अच्छा कहा जाएगा। तानाशाही व्यवस्थाओं के कर्णधार नैपोलियन, हिटलर, मुसोलिनी आदि को भी अनैतिक साधनों से सत्ता का सुख मिला। इसलिए वे भी इसी प्रकार साध्य को महत्व देते हुए इस उक्ति के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया। राजतंत्रात्मक व्यवस्था में राजा राज्य का सर्वेसवा होता है। वह भी साध्य को प्राप्त करने के लिए साधन की पवित्रता और अपवित्रता पर ध्यान नहीं देता।

इसके विपरित लोकतंत्राात्मक व्यवस्था में साध्य और साधन दोनों की पवित्रता पर ध्यान दिया जाता है। भारतीय चिन्तकों ने कहा है कि हमारा साधन उतना ही पवित्र होना चाहिए जितना कि साध्य। भारत ऋषियों और मुनियों का देश है। यहां पर अनैतिक साधनों को सभी भी महत्व नहीं दिया गया। अनैतिक साधन को अपनाकर कभी नैतिक साध्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। यदि मिट्टी खराब होगी तो क्या उससे सुन्दर घड़ा बनाया जा सकता है? कभी नहीं। मिट्टी यदि अच्छी रहेगी तभी अच्छे घड़े को बनाया जा सकता है। गांधीजी, विवेकानन्द, अरविन्द घोष जैसे महापुरूषों ने साध्य की पवित्रता के साथ साथ साधन की पवित्रता पर बल दिया। गांधीजी ने साध्य और साधन में वैसा ही सम्बन्घ बताया है जैसे दीपक और प्रकाश का सम्बन्ध है। गांधीजी के अनुसार दीपक के बिना प्रकाश नहीं हो सकता। साधन के बिना साध्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। साध्य व साधन एक सिक्के के दो पहलू है। गांधीजी का कहना है कि दोनों में फूल व खुशबू जैसा सम्बन्ध है। अरविन्द घोष ने कहा है कि हमारे साधन उतने महान होने चाहिए जितने महान हमारे साध्य हों। गांधीजी ने कार्ल मार्क्स के साधन–साध्य सम्बन्धी सिद्धान्त का खण्डन किया है। एक उदाहरण के माध्य से यह कहा जा सकता है कि एक व्यक्ति दिनभर कठोर परिश्रम करके जो कुछ अर्जित करता है वह दूसरों को बांट देता है। एक दूसरा व्यक्ति चोरी–डकैती करके जो कुछ प्राप्त करता है वह भी दूसरों को बांट देता है। इन दोनों किसका कार्य उत्तम है। यदि यह प्रश्न किया जाये तो उत्तर मिलेगा कि प्रथम व्यक्ति का कार्य उत्तम है। दोनों के साध्य एक हैं किन्तु साधन अलग–अलग। जहां पवित्र साध्य के साथ पवित्र साधन भी हों उसी के कार्य के प्रति लोगों का सहज आकर्षण होता है। भारतीय विचारधारा साधन और साध्य दोनों की पवित्रता पर ध्यान देती है। समस्या के स्थाई समाधान के लिए हृदय परिवर्तन पर जोर दिया जाना चाहिए। यदि हमारा साध्य हिंसा को रोकना है तो उसके लिए धमकी, भय, दबाव और धन की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। ये सब साधन कुछ समय के लिए हिंसा को विराम तो दे सकते हैं किन्तु स्थाई रूप से हिंसा को विराम नहीं दे सकते। इसलिए पवित्र साध्य के लिए पवित्र साधन की आवश्यकता होती है। गांधीजी ने किसी निर्दोष व्यक्ति को बचाने के लिए विशेष झूंठ, फरेब तक को स्थान दिया है। गांधीजी सत्य को साध्य और अहिंसा को साधन मानते हैं। उनके अनुसार सत्य ही ईश्वर है

और ईश्वर ही सत्य है। ऐसा कहकर ईश्वर को साध्य बनाने पर जोर दिया है। साध्य–साधन को न्यायोचित ठहराता है। परीक्षा में उत्तम अंक पाने के लिए यदि कोई विद्यार्थी अनुचित साधनों का सहारा लेता है तो उसके इस कार्य को सही माना जाये या नहीं। विद्यार्थी का लक्ष्य अधिक अंक प्राप्त करना है जिससे उसे जीवन में आगे बढ़ने में सहायता मिले। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उसने जिस साधन को अपनाया है वह साधन ठीक नहीं है। आगे बढ़ने के लिए जीवन में परिश्रम की आवश्यकता होती है। यदि परिश्रम करके आगे बढ़ा जाये तो जीवन जीना अधिक महत्त्वपूर्ण रहेगा। इसलिए कहा जा सकता है कि साध्य को प्राप्त करने के लिए साधन को पवित्र होना चाहिए। पवित्र साधन के द्वारा प्राप्त किया गया साध्य जीवन में उन्नति का प्रदाता होता है। इससे जीवन में सुख और शान्ति की प्राप्ति होती है। गांधीजी का भी विचार यही है कि साध्य और साधन दोनों पवित्र होने चाहिए।